*** अपठित पद्यांश** [16]

1. बात सभी ने यह है मानी।
हवा सुबह की बड़ी सुहानी।
सदा ताज़गी देती है यह।
आलस को हर लेती है यह ॥
यह रोगी न होने देती।
तनिक न सेहत खोने देती।
सुबह सैर पर जाकर देखो।
हवा निराली पाकर देखो।
अगर सैर पर नित जाओगे।
अच्छी सेहत तुम पाओगे।

प्रश्न

(क) इस कविता में किसका गुणगान किया गया है?
(i) सुबह की ताज़गी भरी हवा का
(ii) सुबह-सुबह योगाभ्यास करने का
(iii) सुबह-सवेरे कसरत करने का
(iv) इन सभी का
(ख) सुबह की हवा के बारे में क्या बताया गया है?
(i) सुबह की हवा ताज़गी देती है।
(ii) यह स्वस्थ रखती है।
(iii) यह अच्छी सेहत देती है।
(iv) उपर्युक्त सभी
(ग) सुबह सैर पर जाने से क्या लाभ मिलेगा?
(i) व्यक्ति धनवान बनेगा ।
(ii) अच्छा स्वास्थ्य मिलेगा
(iii) अच्छे दोस्त बनेंगे
(iv) इनमें कोई नहीं
(घ) इस कविता का सबसे उपयुक्त शीर्षक होगा
(i) सुबह की हवा
(ii) सुबह की सैर
(iii) अच्छी सेहत एक वरदान
(iv) आलस्य दूर भगाने का मंत्र

जवाब : (क) (i), (ख) (iv), (ग) (ii), (घ) (ii),

2. आज करना है जिसे, करते उसे हैं आज ही।
सोचते कहते हैं जो कुछ कर दिखाते हैं वही ।।
मानते जी की हैं सुनते हैं, सदा सबकी कही।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही ॥
भूलकर भी दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कौन ऐसा काम है, वे कर जिसे सकते नहीं॥

प्रश्न

(क) कर्मवीर समय का सदुपयोग किस तरह करते हैं?

(i) हर काम को समय पर करते हैं।

(ii) आज का काम कल पर नहीं छोड़ते।

(iii) बेकार की बातों में समय बरबाद नहीं करते

(iv) आलस्य में समय नहीं गॅवाते हैं।

(ख) कर्मवीर के काम करने के तरीके की प्रमुख विशेषताएँ हैं

(i) वे जो ठान लेते हैं, उसे पूरा करके दिखाते हैं, वे बेकार की बातों में समय बर्बाद नहीं करते

(ii) वे किसी के बहकावे में नहीं आते, मन में जो सोचते हैं वही करते हैं।

(iii) वे उचित काम को ही करते हैं।

(iv) वे वीरता के कार्य करते हैं, मुसीबतें आने पर कभी हिम्मत नहीं हारते

(ग) 'भूलकर भी दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं' पंक्ति का भावार्थ है

(i) वे दूसरों की मदद के लिए हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठते

(ii) वे दूसरों की मदद नहीं लेते।

(iii) वे दूसरों की सलाह नहीं मानते

(iv) वे दूसरों से कोई उम्मीद नहीं रखते

(v) उपर्युक्त सभी

(घ) कर्मवीर की दो मुख्य विशेषताएँ हैं

(i) वे कर्मवीर तथा स्वाभिमानी होते हैं

(ii) वे दृढ़ संकल्पी होते हैं, वे समय का सदुपयोग करते हैं

(iii) उनकी कथनी-करनी एक जैसी होती है।

(iv) वे किसी की मदद लेने की उम्मीद में बैठे नहीं रहते

जवाब : (क) (ii), (ख) (iii), (ग) (i), (घ) (iv),

3. भारत माता का मंदिर यह, समता को संवाद जहाँ।
सबका शिव कल्याण यहाँ पाएँ सभी प्रसाद यहाँ।
जाति-धर्म या संप्रदाय का, नहीं भेद व्यवधान यहाँ।
सबका स्वागत, सबका आदर, सबका सम्मान यहाँ।
राम-रहीम, बुद्ध ईसा का, सुलभ एक-सा ध्यान यहाँ।
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के, गुण-गौरव का ज्ञान यहाँ।
नहीं चाहिए बुद्धि वैर की, भला प्रेम उन्माद यहाँ।
सब तीर्थों का एक तीर्थ यह, हृदय पवित्र बना लें हम।
रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने मन के चित्र बना लें हम।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर, एक चरित्र बना लें हम।
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर, उठे एक जयनाद यहाँ।
सबका शिव कल्याण यहाँ है, पाएँ सभी प्रसाद यहाँ।

प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(क) कवि किस मंदिर की बात कर रहा है?
(i) शिव मंदिर
(ii) शक्ति मंदिर
(iii) राम सीता मंदिर
(iv) भारत माता

(ख) जाति, धर्म, संप्रदाय का भेद कहाँ नहीं है?
(i) भारत-माता मंदिर में
(ii) हनुमान मंदिर में
(iii) शिव मंदिर
(iv) बौद्ध मंदिर

(ग) सबको आदर सम्मान कहाँ होता है?
(i) भारत देश में
(ii) ईरान
(iii) चीन में
(iv) पाकिस्तान में

जवाब : (क) (iv), (ख) (i), (ग) (i),

4. भारत माता का मंदिर यह, समता को संवाद जहाँ।
सबका शिव कल्याण यहाँ पाएँ सभी प्रसाद यहाँ।
जाति-धर्म या संप्रदाय का, नहीं भेद व्यवधान यहाँ।
सबका स्वागत, सबका आदर, सबका सम्मान यहाँ।
राम-रहीम, बुद्ध ईसा का, सुलभ एक-सा ध्यान यहाँ।
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के, गुण-गौरव का ज्ञान यहाँ।
नहीं चाहिए बुद्धि वैर की, भला प्रेम उन्माद यहाँ।
सब तीर्थों का एक तीर्थ यह, हृदय पवित्र बना लें हम।
रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने मन के चित्र बना लें हम।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर, एक चरित्र बना लें हम।
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर, उठे एक जयनाद यहाँ।
सबका शिव कल्याण यहाँ है, पाएँ सभी प्रसाद यहाँ।

प्रश्न:
(क) हमारे यहाँ भारत माता के मंदिर में किस प्रकार का भेदभाव नहीं है?
(ख) उपर्युक्त पद्यांश में किन-किन महापुरुषों का वर्णन है? उनके बारे में क्या चर्चा की गई है?
(ग) हम सबके मित्र कैसे बन सकते हैं?
(घ) उपर्युक्त पद्यांश में एकता को एक सूत्र में बाँधने कि लिए क्या प्रयास किया गया है?

जवाब : (क) भारत माता के मंदिर में जाति, धर्म या संप्रदाय के आधार पर किसी तरह का भेदभाव नहीं है। यहाँ सभी को समान दृष्टि से देखा जाता है।
(ख) इस पद्यांश में राम, रहीम, बुद्ध और ईसा के नाम आएँ हैं। इनके बारे में कहा गया है कि भारतवासी इनमें से किसी के भी बताए गए मार्ग पर चल सकते हैं यानी यहाँ सभी धर्मावलंबियों को समान अधिकार प्राप्त है।
(ग) किसी से बगैर शत्रुता का भाव रखते हुए हम सबको अपना मित्र बना सकते हैं। कवि ने लोगों को अजातशत्रु

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

बनने की सलाह दी है।
(घ) उपर्युक्त पद्यांश में एकता को एक सूत्र में बाँधने के लिए विभिन्न प्रकार के आदर्शों को ग्रहण करते हुए एक चरित्र बनाने तथा करोड़ों लोगों को एक ही जयनाद का उद्घोष करने का सुझाव दिया है।

*** अपठित गद्यांश** **[24]**

5. समय बहुत मूल्यावान होता है। यह बीत जाए तो लाखों-करोड़ों रुपये खर्च करके भी इसे वापस नहीं लाया जा सकता। इस संसार में जिसने भी समय की कद्र की है, उसने सुख के साथ जीवन गुजारा है और जिसने समय की बर्बादी की, वह खुद ही बर्बाद हो गया है। समय का मूल्य उस खिलाड़ी से पूछिए, जो सेकंड के सौवे हिस्से से पदक चूक गया हो। स्टेशन पर खड़ी रेलगाड़ी एक मिनट के विलंब से छूट जाती है। आजकल तो कई विद्यालयों में देरी से आने पर विद्यालय में प्रवेश भी नहीं करने दिया जाता। छात्रों को तो समय का मूल्य और भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिए, क्योंकि इस जीवन की कद्र करके वे अपने जीवन के लक्ष्य को पा सकते हैं।

प्रश्नो

(क) उपरोक्त गद्यांश में कीमती किसे माना गया है?
(i) जीवन को
(ii) अनुशासन को
(iii) समय को
(iv) खेल को

(ख) किसने सुख के साथ जीवन गुजारा
(i) जिसने दुनिया में खूब धन कमाया
(ii) जिसने मीठी बाणी बोली
(iii) जिसने समय की कद्र की
(iv) जिसने समय को बर्बाद किया

(ग) सेकंड के सौवें हिस्से से पदक कौन चूक जाता है
(i) खिलाड़ी जिसने मामूली अंतर से पदक गंवा दिया हो
(ii) वह यात्री जिसकी ट्रेन छूट गई
(iii) उपर्युक्त दोनों लोग
(iv) इनमें कोई नहीं

(घ) छात्रों को समय की कद्र करने से क्या लाभ होता है?
(i) वे स्वस्थ हो जाते हैं।
(ii) वे मेधावी बन जाते हैं।
(iii) वे सभी विषयों में 100% अंक प्राप्त करते हैं।
(iv) वे लोकप्रिय हो जाते हैं।

जवाब : (क) (iii) (ख) (iii) (ग) (iii) (घ) (iii)

6. बढ़ती जनसंख्या ने अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म दिया है-रोटी, कपड़ा, मकान की कमी, बेरोजगारी, निरक्षता, कृषि एवं उद्योगों के उत्पादनों में कमी आदि। हम जितनी अधिक उन्नति करते हैं या विकास करते हैं, जनसंख्या उसके अनुपात में बढ़ जाती है। बढ़ती जनसंख्या के समक्ष हमारा विकास बहुत कम रह जाता है और

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

विकास कार्य दिखाई नहीं देते। बढ़ती जनसंख्या के समक्ष सभी सरकारी प्रयास असफल दिखाई देते हैं। कृषि उत्पादन और औद्योगिक विकास बढ़ती जनसंख्या के सामने नगण्य सिद्ध हो रहे हैं। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए जनसंख्या वृद्धि पर नियत्रंण की अति आवश्यकता है। इसके बिना विकास के लिए किए गए सभी प्रकार के प्रयत्न अधूरे रह जाएँगे।

प्रश्न

(क) बढ़ती जनसंख्या से किसमें कमी आई है?
(i) बेरोजगारी
(ii) गरीबी
(iii) निरक्षरता
(iv) कृषि एवं उद्योगों के उत्पादनों में

(ख) जनसंख्या बढ़ने से किन चीजों में बढ़ोत्तरी हुई है?(i) लोगों के कार्य करने की क्षमता में
(ii) शिक्षा में
(iii) गरीबी एवं बेरोजगारी में
(iv) लोगों के स्वास्थ्य में

(ग) हमारा विकास कार्य दिखाई नहीं देता, क्योंकि
(i) विकास के अनुपात में जनसंख्या वृधि अधिक है।
(ii) जनसंख्या वृद्धि कम हैं।
(iii) उपर्युक्त दोनों ।
(iv) इनमें से कोई नहीं

जवाब : (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (i)

7. संसार में सबसे मूल्यावान वस्तु समय है क्योंकि दुनिया की अधिकांश वस्तुओं को घटाया-बढ़ाया जा सकता है, पर समय का एक क्षण भी बढ़ा पाना व्यक्ति के बस में नहीं है। समय के बीत जाने पर व्यक्ति के पास पछतावे के अलावा कुछ नहीं होता। विद्यार्थी के लिए तो समय का और भी अधिक महत्त्व है। विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य है शिक्षा प्राप्त करना। समय के उपयोग से ही शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। जो विद्यार्थी अपना बहुमूल्य समय खेल-कूद, मौज-मस्ती तथा आलस्य में खो देते हैं वे जीवन भर पछताते रहते हैं, क्योंकि वे अच्छी शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं और जीवन में उन्नति नहीं कर पाते। मनुष्य का कर्तव्य है कि जो क्षण बीत गए हैं, उनकी चिंता करने के बजाय जो अब हमारे सामने हैं, उसका सदुपयोग करें।

प्रश्न

(क) समय को सबसे अमूल्य वस्तु क्यों कहा गया है?
(i) इसका एकक्षण भी घटाया-बढ़ाया नहीं जा सकता
(ii) सम्य व्यक्ति के वश में नहीं है।
(iii) समय ही व्यक्ति के जीवन को बदल सकता है
(iv) मनुष्य उस समय की गति को नहीं रोक सकता

(ख) विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य है
(i) जीवन को सुखी बनाना
(ii) गुरुओं का आदेश मानना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(iii) व्यक्ति के जीवन में समय का महत्त्व
(iv) शिक्षा प्राप्त करना

(ग) विद्यार्थी जीवन भर क्यों पछताते रहते हैं ?
(i) क्योंकि वे आलसी होते हैं
(ii) जो अपना कीमती समय मौज मस्ती और आलस्य में खो देते हैं।
(iii) जो ज्ञान प्राप्त नहीं करते।
(iv) जो विद्यार्थी माता-पिता और गुरुओं की आज्ञा का पालन नहीं करते

(घ) संमय के संबंध में व्यक्ति का क्या कर्तव्य बताया गया है?(i) परिश्रम करें
(ii) मन लगाकर पढ़ाई करें
(iii) बीते समय के बारे में पश्चाताप न करके वर्तमान समय का सदुपयोग करें
(iv) असफल होने पर निराश न हों, पुनः प्रयास करें

जवाब : (क) (i) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (iii)

8. संसार में सबसे मूल्यावान वस्तु समय है क्योंकि दुनिया की अधिकांश वस्तुओं को घटाया-बढ़ाया जा सकता है, पर समय का एक क्षण भी बढ़ा पाना व्यक्ति के बस में नहीं है। समय के बीत जाने पर व्यक्ति के पास पछतावे के अलावा कुछ नहीं होता। विद्यार्थी के लिए तो समय का और भी अधिक महत्त्व है। विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य है शिक्षा प्राप्त करना। समय के उपयोग से ही शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। जो विद्यार्थी अपना बहुमूल्य समय खेल-कूद, मौज-मस्ती तथा आलस्य में खो देते हैं वे जीवन भर पछताते रहते हैं, क्योंकि वे अच्छी शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं और जीवन में उन्नति नहीं कर पाते। मनुष्य का कर्तव्य है कि जो क्षण बीत गए हैं, उनकी चिंता करने के बजाय जो अब हमारे सामने हैं, उसका सदुपयोग करें।
प्रश्नोत्तर:
(क) संसार में सबसे मूल्यवान वस्तु क्या है?
(ख) व्यक्ति के बस में क्या नहीं है?
(ग) किस प्रकार के विद्यार्थी पछताते हैं?
(घ) मनुष्य का क्या कर्तव्य है?

जवाब : (क) संसार में सबसे मूल्यवान समय है।
(ख) समय के एक भी क्षण को बढ़ा पाना व्यक्ति के बस में नहीं है।
(ग) जो विद्यार्थी अपना समय खेल-कूद, मौज-मस्ती एवं आलस में बिता देते हैं, वे पछताते हैं।
(घ) मनुष्य का कर्तव्य है कि बीते हुए समय पर विचार न करके जो समय अपने पास है उसका सदुपयोग करे।

9. बढ़ती जनसंख्या ने अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म दिया है-रोटी, कपड़ा, मकान की कमी, बेरोजगारी, निरक्षता, कृषि एवं उद्योगों के उत्पादनों में कमी आदि। हम जितनी अधिक उन्नति करते हैं या विकास करते हैं, जनसंख्या उसके अनुपात में बढ़ जाती है। बढ़ती जनसंख्या के समक्ष हमारा विकास बहुत कम रह जाता है और विकास कार्य दिखाई नहीं देते। बढ़ती जनसंख्या के समक्ष सभी सरकारी प्रयास असफल दिखाई देते हैं। कृषि उत्पादन और औद्योगिक विकास बढ़ती जनसंख्या के सामने नगण्य सिद्ध हो रहे हैं। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए जनसंख्या वृद्धि पर नियत्रंण की अति आवश्यकता है। इसके बिना विकास के लिए किए गए सभी प्रकार के प्रयत्न अधूरे रह जाएँगे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न:

(क) बढ़ती जनसंख्या ने किसे जन्म दिया है?

(ख) विकास कार्य क्यों नहीं दिखाई देते ?

(ग) बढ़ती जनसंख्या के सामने कौन से प्रयास असफल दिखाई देते हैं ?

(घ) "नगण्य' शब्द का सही अर्थ क्या है?

जवाब : (क) बढ़ती जनसंख्या ने कई प्रकार की समस्याओं को जन्म दिया है। इनमें रोटी, कपड़ा, मकान की कमी, बेरोजगारी, निरक्षता, कृषि एवं उद्योगों के उत्पादनों में कमी आदि।

(ख) जनसंख्या वृद्धि के कारण हमें विकास कार्य नहीं दिखाई देते हैं।

(ग). बढ़ती जनसंख्या के सामने सभी सरकारी प्रयास असफ ल दिखाई देते हैं।

(घ)'नगण्य' शब्द का सही अर्थ है अपर्याप्त।

10. समय बहुत मूल्यावान होता है। यह बीत जाए तो लाखों-करोड़ों रुपये खर्च करके भी इसे वापस नहीं लाया जा सकता। इस संसार में जिसने भी समय की कद्र की है, उसने सुख के साथ जीवन गुजारा है और जिसने समय की बर्बादी की, वह खुद ही बर्बाद हो गया है। समय का मूल्य उस खिलाड़ी से पूछिए, जो सेकंड के सौवे हिस्से से पदक चूक गया हो। स्टेशन पर खड़ी रेलगाड़ी एक मिनट के विलंब से छूट जाती है। आजकल तो कई विद्यालयों में देरी से आने पर विद्यालय में प्रवेश भी नहीं करने दिया जाता। छात्रों को तो समय का मूल्य और भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिए, क्योंकि इस जीवन की कद्र करके वे अपने जीवन के लक्ष्य को पा सकते हैं।

प्रश्नोत्तर:

(क) गद्यांश में किसे और क्यों मूल्यवाने बताया गया है?

(ख) समय को महत्त्व देने वालों का जीवन कैसा होगा?

(ग) कौन व्यक्ति स्वयं बर्बाद हो जाता है?

(घ) "समय का हर पल कीमती होता है। इस कथन के लिए गद्यांश में कौन-सा उदाहरण पेश किया गया है?

जवाब : (क) गद्यांश में समय को मूल्यवान बताया गया है। ऐसा इसलिए क्योंकि यदि वह बीत जाए तो इसे लाखों करोड़ों रुपये खर्च करके भी बीता हुआ समय वापिस नहीं हो सकता है।

(ख) समय के महत्त्व को समझने वालों को जीवन सुखमय होता है। वे अपना जीवन आनंदपूर्वक व्यतीत करते हैं।

(ग) समय को व्यर्थ में बर्बाद करने वाला व्यक्ति स्वयं बर्बाद हो जाता है।

(घ) इस कथन के लिए गद्यांश में खिलाड़ी का उदाहरण पेश किया गया है, जो सेकंड के सौवें हिस्से के अंतर से पदक नहीं जीत सका था।

*** पत्र लेखन** **[70]**

11. **पत्र के प्रकार**

(क) औपचारिक पत्र (ख) अनौपचारिक पत्र

जवाब : (क) औपचारिक पत्र – औपचारिक पत्र ऐसे लोगों को लिखे जाते हैं जिनसे लिखने वाले का कोई व्यक्तिगत या पारिवारिक संबंध नहीं होता है। औपचारिक पत्रों को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है।

1.प्रार्थना पत्र – अवकाश, शिकायत, सुधार, आवेदन के लिए लिखे गए पत्र आदि।

2.कार्यालयी पत्र – किसी सरकारी अधिकारी अथवा विभाग को लिखे गए पत्र आदि।

3.व्यावसायिक पत्र – दुकानदार, प्रकाशक, व्यापारी, कंपनी आदि को लिखे गए पत्र आदि।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ख) अनौपचारिक पत्र – इस वर्ग में वैयक्तिक तथा पारिवारिक पत्र आते हैं। इस प्रकार के पत्र माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी, मित्र-सहेली तथा संबंधियों को लिखे जाते हैं।

12. पत्र के अंग

जवाब : पत्र के निम्नलिखित अंग होते हैं-

- भेजने का स्थान, दिनांक और पता – पहले यह दाईं ओर लिखा जाता था, आजकल बाईं ओर से लिखने का प्रचलन हो गया है।
- संबोधन एवं अभिवादन – जिसे पत्र लिखा जा रहा है, उसकी आयु, योग्यता संबंध आदि के अनुरूप शब्द।
- विषयवस्तु – पत्र के अंत में पत्र लेखक पाने वाले से अपने संबंध के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग करता है तथा उसके नीचे हस्ताक्षर भी करता है।
- समापन

13. विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र प्रदान करने के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखिए।

जवाब : सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
दिल्ली पब्लिक स्कूल
आर, के, पुरम, नई दिल्ली
दिनांक .....
महोदय
सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की छठी 'ए' कक्षा का छात्र हूँ। मेरे पिता जी को स्थानांतरण (तबादला)राजस्थान के जोधपुर शहर में हो गया है। पिता जी के साथ पूरा परिवार भी जोधपुर जा रहा है। मेरा यहाँ अकेले रहना संभव नहीं है इसलिए मैं भी जोधपुर में ही शिक्षा प्राप्त करूंगा।
अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि मुझे विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र प्रदान करें ताकि मैं वहाँ किसी अच्छे विद्यालय की छठी कक्षा में प्रवेश ले सकें। इसके लिए मैं सदा आभारी रहूँगा। आपका आज्ञाकारी छात्र
ओजस्व तिवारी
छठी 'ए' अनुक्रमांक-2
दिनांक .....

14. विद्यालय के प्रधानाचार्य को शुल्क माफ़ कराने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

जवाब : सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
सेंट स्टीफन स्कूल
जनकपुरी, नई दिल्ली
दिनांक .....
विषय-शुल्क माफ़ करने के संबंध में
महोदय
निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा छठी 'ब' का छात्र हूँ। मेरे पिता जी एक निजी कंपनी में लिपिक के पद पर कार्य करते हैं। उनका वेतन मात्र 8000 रुपये मासिक है जिससे परिवार का भरण-पोषण मुश्किल से हो पाता है। परिवार में मेरे दादा-दादी जी भी हैं जिनकी जिम्मेदारी भी मेरे पिता पर है। मेरे अलावा मेरे दो भाई-बहन भी पढ़ते हैं। इन परिस्थितियों में मेरे पिता जी मेरा शिक्षण शुल्क देने में असमर्थ हैं।
मान्यवर, मैंने पिछली पाँचवीं कक्षा के सभी वर्गों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था। अनेक जिला स्तरीय व राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त कर चुका हूँ। अतः आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि मेरा पूरा शुल्क माफ़ करने की कृपा करें ताकि मुझे अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़ने के लिए विवश न होना पड़े।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

आपकी इस कृपा के लिए मैं आपका आजीवन आभारी रहूँगा। सधन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
राजा
कक्षा छठी 'ब' अनुक्रमांक-2
दिनांक .....

15. विद्यालय के प्रधानाचार्य को अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

जवाब : सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
माउंट आबू पब्लिक स्कूल
बी, जे, वेस्ट शालीमार बाग
नई दिल्ली
विषय-दो दिन अवकाश के संबंध में।
महोदय सविनय निवेदन है कि मैं इस विद्यालय की छठी 'बी' की छात्रा हूँ। कल विद्यालय से वापस आने के बाद से मुझे बुखार आ गया और सिर में दर्द हो गया। डॉक्टर ने दवाएँ देकर दो दिन आराम करने की सलाह दी है। इस कारण मैं दिनांक 28 एवं 29 सितंबर 20xx तक विद्यालय में उपस्थित होने में असमर्थ हूँ।
अतः आपसे अनुरोध है कि दो दिनों का अवकाश स्वीकृत करने की कृपा करें।
सधन्यवाद
आपकी आज्ञाकारी शिष्या
अंशु तिवारी
छठी 'ए' अनुक्रमांक-12
दिनांक

16. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को अपना सेक्शन बदलवाने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

जवाब : सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
सर्वोदय विद्यालय
सेक्टर-8 रोहिणी दिल्ली
विषय-अपना सेक्शन बदलवाने के संबंध में ।
मान्यवर
सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में छठी 'सी' का छात्र हूँ। मैंने इसी माह आपके विद्यालय में प्रवेश लिया है। मैं रानीबाग से आता हूँ।

रानीबाग से ही छठी कक्षा में पढ़ने वाले तीन और छात्र भी आते हैं, परंतु वे छठी 'बी' वर्ग में हैं। मैं चाहता हूँ कि आप मुझे भी छठी 'बी' वर्ग में स्थानांतरित करने की स्वीकृति प्रदान कर दें। जिससे मैं भी उन छात्रों के साथ मिलकर पढ़ाई कर सकें तथा किसी दिन अनुपस्थित रहने की स्थिति में उनसे उस दिन के गृहकार्य की जानकारी प्राप्त कर सकें।

मुझे आशा है कि आप मेरी प्रार्थना पर विचार करते हुए मुझे छठी 'बी' कक्षा में स्थानांतरित करने की स्वीकृति प्रदान करेंगे।
सधन्यवाद

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

आपका आज्ञाकारी शिष्य
आयुष तिवारी
कक्षा छठी 'सी' अनुक्रमांक-5
दिनांक .....

17. अपने क्षेत्र की सफ़ाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

जवाब : सेवा में
स्वास्थ्य अधिकारी
नोएडा नगर निगम
सेक्टर-4 गौतमबुद्ध नगर
गाजियाबाद
विषय-मोहल्ले की सफ़ाई के संबंध में पत्र
महोदय
आपको ध्यान नोएडा सेक्टर-4 के क्षेत्र में फैली गंदगी की ओर आकर्षित करना चहता हूँ। यहाँ की सड़कें महीनों से कूड़े से भरी हुई। हैं, रास्ते से निकलना भी दूभर हो चुका है। सड़क के आसपास व खुले स्थानों पर कूड़ा पड़ा है। चारों ओर मच्छरों का साम्राज्य है। गंदगी के कारण मलेरिया, वायरल तथा डेंगू फैलने का भी खतरा बना हुआ है। यहाँ के सफ़ाई कर्मचारी बहुत लापरवाह हैं। मुश्किल से एक सप्ताह में एक बार आते हैं। कूड़ा उठाने के नाम पर अलग से पैसे की माँग करते हैं। यहाँ कोई कूड़ेदान भी नहीं रखा गया है। अतः आपसे अनुरोध है कि इस मामले में व्यक्तिगत रूप से हस्तक्षेप करते हुए यहाँ की सफ़ाई व्यवस्था को ठीक कराने की कृपा करें।
सधन्यवाद
नोएडा सेक्टर-4 क्षेत्र के निवासी
दिनांक .....

18. अपने क्षेत्र के पत्रवाहक के डाक-वितरण में गड़बड़ी की शिकायत करते हुए डाकपाल को पत्र लिखिए।

जवाब : सेवा में
डाकपाल महोदय
मुख्य डाकघर नोएडा
प्रधान डाकघर गाजियाबाद
उत्तर प्रदेश
विषय-डाकिए की लापरवाही के संबंध में
महोदय
मैं अपका ध्यान नोएडा के पत्रवाहक की लापरवाही और डाक विभाग में गड़बड़ी की ओर दिलाना चाहता हूँ। हमारे क्षेत्र में पत्रवाहक समय पर डाक वितरित नहीं करता है। बीच-बीच में वह कई-कई दिन डाक वितरित करने के लिए नहीं आता तथा पत्रों को आँगन में या इधर-उधर फेंक जाता है जिससे कई बार वे हवा से इधर-उधर भी उड़ जाते हैं। हमें कई बार महत्त्वपूर्ण पत्र भी समय पर प्राप्त नहीं होते हैं। इससे पूरे क्षेत्र के निवासियों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इस कारण अनेक नवयुवक साक्षात्कार पर नहीं पहुँच सकते हैं।

अतः आपसे निवेदन है कि आप पत्रवाहक के कार्य की जाँच करें और उसके खिलाफ कार्यवाही करें।
भवदीय
आयुष रंजन तिवारी
नोएडा सेक्टर-4
उत्तर प्रदेश

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

19. अपने मोहल्ले में चोरी की बढ़ती घटनाओं को रोकने के संबंध में थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

जवाब : सेवा में
थाना अध्यक्ष महोदय
लोनी गाज़ियाबाद
विषय-मोहल्ले में बढ़ती चोरी की घटनाओं के संबंध में।
महोदय
निवेदन यह है कि मै डी.एल.एफ. अंकुर विहार का निवासी हूँ। मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले डी.एल.एफ. अंकुर विहार की ओर आकर्षित करना चहता हूँ। यहाँ गत एक माह से लगातार चोरी की घटनाएँ अचानक बढ़ गई हैं। पिछले सप्ताह बी-ब्लॉक में चोरों ने चार दुकानों का शटर काटकर चोरी की। उससे दो दिन पहले जे.पी. ज्वेलर्स नामक दुकान का शटर तोड़कर सेफ तथा ढेरों आभूषण उठा ले गए। वे यह काम इतनी सफ़ाई से करते हैं, उन्हें किसी कानून का कोई डर नहीं रह गया है।
अतः आपसे अनुरोध है कि इस मामले में व्यक्तिगत हस्तक्षेप करते हुए आवश्यक कार्यवाही करें ताकि जनता भयमुक्त होकर रह सके।
धन्यवाद सहित
भवदीय
राम किशन शर्मा
बी, 4/13 डी, एल, एफ,
लोनी गाजियाबाद।

20. पुस्तक विक्रेता से पुस्तकें मँगवाने के लिए पत्र लिखिए।

जवाब : बी 4/13 डी, एल, एफ,
अंकुर विहार, लोनी
गाजियाबाद।
सेवा में
प्रबंधक महोदय
फ्रैंक एजुकेशनल ऐड्स प्रालि
A-39, सैक्टर-4 नोएडा।
महोदय
मुझे आपके द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तकों की आवश्यकता है। आपसे अनुरोध है कि ये पुस्तकें वी, पी, पी, द्वारा ऊपर लिखे मेरे पते पर भिजवाने का कष्ट करें। पत्र के साथ ही मैं अग्रिम धनराशि के रूप में एक हजार रुपये का ड्राफ्ट भेज रहा हूँ। शेष राशि वी, पी, पी, मिलते समय अदा कर दूंगा।

पुस्तक का नाम
1. हिंदी व्याकरण भाग-6 प्रतियाँ 1
2. English Grammar & Composition प्रतियाँ 1
3. हिंदी रीडर भाग-6 प्रतियाँ 1
4. Mathematics भाग-6 प्रतियाँ 2
धन्यवाद सहित
संजीव तिवारी

21. अपने मित्र को अपने जन्म दिन पर आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जवाब : 'भारद्वाज निवास'
B-4/13
डी, एल, एफ, अंकुर विहार
लोनी गाजियाबाद
दिनांक ...
प्रिय मित्र अंकित
मधुर स्नेह
मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा करता हूँ कि तुम भी सपरिवार सकुशल होगे। तुम्हें याद दिलाने की आवश्यकता नहीं है कि मेरा जन्मदिन 03 दिसंबर को आता है। हर वर्ष की तरह इस बार भी मैं अपना जन्म दिन धूमधाम से मना रहा हूँ। मैं तुम्हें अपने जन्म दिन पर निमंत्रित करता हूँ। मैंने अपने सभी मित्रों को बुलाया है। तुम्हें भी अवश्य आना है।
कार्यक्रम गत वर्ष की भाँति ही रहेगा। प्रातः 10:00 बजे हवन, दोपहर का भोजन तथा सायंकाल 6:00 बजे केक काटने की रस्म एवं गीत-संगीत का कार्यक्रम।
मुझे आशा एवं विश्वास है कि तुम नियत समय पर पहुँच जाओगे।
धन्यवाद
तुम्हारा मित्र
आयुष रंजन

22. अपने मित्र को पत्र लिखकर अपनी ऐतिहासिक यात्रा का वर्णन कीजिए।

जवाब : प्रिय मित्र ओजस्व
सस्नेह नमस्कार
पिछले पत्र में तुमने मुझसे पूछा था कि इस बार गरमी की छुट्टियाँ कैसे बितायी थीं। उसी क्रम में मैं यह पत्र लिख रहा हूँ। मित्र, गरमी की छुट्टियों के प्रारंभ होने के दो दिन बाद ही कुछ ऐतिहासिक स्थलों को देखने के लिए गए। शुरुआत में आगरे का ताजमहल देखा। फिर वहाँ से हम ट्रेन द्वारा राजस्थान के ऐतिहासिक स्थलों को देखने गए। वहाँ से उदयपुर, जयपुर, चित्तौड़गढ़ आदि के प्रसिद्ध किले तथा वस्तुएँ देखीं। उन्हें देखकर हमें बहुत आनंद का अनुभव हुआ। आशा है तुम भी वहाँ के ऐतिहासिक स्थलों को देखकर आनंद को अनुभव करोगे।
माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना एवं छोटू को प्यार।
तुम्हारा अभिन्न मित्र।
सोना बाबू।

23. अपने छोटे भाई को परीक्षा में सफलता पाने पर बधाई-पत्र लिखिए।

जवाब : छात्रावास (कक्ष सं. 5)
ग्रीन फील्ड स्कूल
ग्रीन पार्क नई दिल्ली।
प्रिय अनुज नवीन
स्नेहाशीष
यहाँ मैं सकुशल हूँ। आशा है तुम वहाँ सकुशल होगे। कल ही पिता जी का पत्र मिला। पत्र पढ़कर पता चला कि इस वर्ष तुम कक्षा में प्रथम आए हो और सभी विषयों में 'ए' श्रेणी प्राप्त की है। सच मानो, पढ़कर बहुत खुशी हुई। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि सफलता सदैव तुम्हारे कदम चूमे और तुम आसमान की ऊँचाई तक पहुँचो।
मैंने तुम्हें वचन दिया था कि अगर तुम कक्षा में प्रथम आओगे तो एक अच्छी सी घड़ी मेरी ओर से तम्हें पुरस्कार स्वरूप प्राप्त होगी। दशहरे की छुट्टियों में जब मैं घर जाऊँगा तो तुम्हें लेकर बाज़ार जाऊँगा और तुम्हारी पसंद की घड़ी दिलाऊँगा। माँ और पिता जी को मेरा प्रणाम कहना।।
तुम्हारा अग्रज सौरभ ।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

24. मित्र को अपने बड़े भाई के विवाह में सम्मिलित होने के लिए पत्र लिखिए।

जवाब : नवजीवन स्कूल
डी, एल, एफ,
अंकुर विहार, लोनी
गाजियाबाद
प्रिय राजेश
सप्रेम नमस्ते
तुम्हें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि मेरे बड़े भाई प्रणव भारद्वाज का शुभ विवाह गाज़ियाबाद के स्कूल शिक्षक अनंत त्रिपाठी की सुपुत्री सीमा से इसी मास की 25 तारीख को होना निश्चित हुआ है। इस विवाह में तुम जैसे सभी मित्र तथा बंधुओं का शामिल होना आवश्यक है। अतः तुमको भाई साहब की बारात में भी चलना पड़ेगा। विवाहोत्सव का कार्यक्रम इस प्रकार है
25 तारीख एक बजे प्रीतिभोज
25 तारीख सायं 5 बजे घुड़चढ़ी
25 तारीख बारात का गाजियाबाद प्रस्थान सायं 5 बजे।
आशा है कि तुम 23 तारीख को पहुँच जाओगे। नवीन, रंजीत तथा विशाल भी 23 तारीख को यहाँ पहुँच जायेंगे।
तुम्हारा मित्र
तुषार
दिनांक .....

*** निबंध-लेखन** **[40]**

25. विद्यार्थी जीवन

जवाब :
विद्यार्थी का जीवन समाज व देश की अमूल्य निधि होता है। विद्यार्थी समाज की रीढ़ है, क्योंकि समाज तथा देश की प्रगति इन्हीं पर निर्भर करती है? अतः विद्यार्थी जीवन पूर्णतया अनुशासित होना चाहिए। वे जितने अनुशासित बनेंगे उतना ही अच्छा समाज व देश बनेगा।

विद्यार्थी जीवन को स्वर्णिम काले है। इसी काल में भावी जीवन की तैयारी की जाती है तथा शक्तियों का विकास किया जाता है। इस काल में बालक के मस्तिष्क रूपी स्लेट पर कुछ अंकित हो जाता है। इसी काल में भावी जीवन की भव्य इमारत की आधारशिला का निर्माण होता है। यह आधारशिला जितनी मजबूत होगी, भावी जीवन उतना ही सुदृढ़ होगा। इस काल में विद्याध्ययन तथा ज्ञान प्राप्ति पर ध्यान न देने वाले विद्यार्थी जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो पाते।

विद्यार्थी जीवन की महत्ता को जानते हुए प्राचीन काल में विद्यार्थी को घरों से दूर गुरुकुल में रहकर विद्याध्ययन करना पड़ता था, गुरु के कठोर अनुशासन को उसे पालन करना पड़ता था। गुरु अपने शिष्यों को तपा-तपाकर स्वर्ण बना देता था।

लेकिन आधुनिक युग में विद्यार्थी विद्यालयों में विद्याध्ययन करता है। आज गुरु ओं के कठोर अनुशासन का अभाव है। आज शिक्षा का संबंध धन से जोड़ा जाता है। विद्यार्थी यह समझता है कि वह धन देकर विद्या प्राप्त कर रहा है। उसमें गुरुओं के प्रति सम्मान के भाव की कमी पाई जाती है। शिक्षा में नैतिक मूल्यों का कोई स्थान नहीं है। इन्हीं कारणों से आज विद्यार्थी अनुशासनहीन पश्चिमी सभ्यता का अनुयायी तथा भारतीय संस्कृति से दूर हो गया है।
आदर्श विद्यार्थी के गुणों की चर्चा करते हुए कहा गया है

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काक चेष्टा बको ध्यानं श्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थिन पंचलक्षणं ॥

अर्थात विद्यार्थी को कौए के समान चेष्ठावान, बगुले के समान एकाग्रचित्त, कुत्ते के समान कम सोने वाला, कम खाने वाला तथा विद्याध्ययन के लिए त्याग करने वाला होना चाहिए। दुर्भाग्य का विषय है कि आधुनिक विद्यार्थी में इन गुणों का अभाव पाया जाता है। विद्यार्थी ही देश के भविष्य होते हैं। इसलिए विद्यार्थियों में विनयशीलता, संयम आज्ञाकारिता जैसे गुणों का विकास किया जाना चाहिए। इसके लिए उन्हें कुसंगति से बचना चाहिए तथा आलस्य का परित्याग करके विद्यार्थी जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए।

आज के विद्यार्थी वर्ग के पतन के लिए वर्तमान शिक्षा पद्धति भी जिम्मेदार है। अतः उसमें परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। शिक्षाविदों का यह दायित्व है कि वे देश की भावी पीढ़ी को अच्छे संस्कार देकर उन्हें प्रबुद्ध तथा कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाएँ तो साथ ही विद्यार्थियों को भी कर्तव्य है कि वे भारतीय संस्कृति के उच्चादर्शों को अपने जीवन में उतारने के लिए कृतसंकल्प हों।

26. स्वतंत्रता दिवस

जवाब : स्वतंत्र रहने की इच्छा केवल मनुष्य में ही नहीं पशु, पक्षियों में भी पाई जाती है। हमारे देश को स्वतंत्र कराने के लिए हमारे देश के अनेक नेताओं ने अपना बलिदान दिया था उन्हीं के बलिदान के परिणामस्वरूप 15 अगस्त 1947 में हमें अंग्रेजी शासन से मुक्ति मिली। थी। इसी दिन से भारत एक स्वतंत्र देश गिना जाने लगा। तब से लेकर हर वर्ष 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस राष्ट्रीय पर्व के रूप में आयोजित किया जाता है।

स्वतंत्रता दिवस पर पूरे देश में अनेक प्रकार के कार्यक्रम होते हैं जिनमें देशभक्तों को याद किया जाता है तथा राष्ट्रीय ध्वज फ हराया जाता है। दिल्ली में ऐतिहासिक लाल किले पर भारत के प्रधानमंत्री प्रातः ध्वजारोहण करते हैं। राष्ट्रीय ध्वज को तोपों की सलामी दी जाती है। ध्वजारोहण के पश्चात प्रधानमंत्री देशवासियों के नाम अपना संदेश देते हैं। इस कार्यक्रम को दूरदर्शन पर सीधा प्रसारित किया जाता है।

स्वतंत्रता दिवस का राष्ट्रीय पर्व हमें देश के प्रति अपने कर्तव्यों को याद दिलाता है। हमारा कर्तव्य है कि उन देश भक्तों की कुरबानी को न भूलें जिन्होंने अपने मस्तक देकर हमें स्वतंत्रता का उपहार प्रदान किया। इस दिन हमें देश की एकता और अखंडता की रक्षा । का प्रण लेना चाहिए।

27. मेरा जीवन लक्ष्य

जवाब : प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का कुछ न कुछ लक्ष्य अवश्य होता है। वह अपने भविष्य के बारे में तरह-तरह के सपने संजोता है तथा उस लक्ष्य को पाने के लिए कोशिश भी करता है; जैसे-कुछ युवक डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक आदि बनना चाहते हैं। मैंने भी अपने जीवनकाल के बारे में एक स्वप्न देखा है। मैं बड़ा होकर एक चिकित्सक बनना चाहता हूँ परंतु मेरे माता-पिता मुझे इंजीनियर बनाना चाहते हैं लेकिन मैंने प्रण लिया है कि मैं बड़ा होकर एक चिकित्सक ही बनूंगा।

सब लोग समझते हैं कि चिकित्सक के व्यवसाय में खूब आय होती है तथा आज के समय में लोग धनी व्यक्ति को ही सम्मान देते हैं, लेकिन मैंने चिकित्सक बनने का लक्ष्य धन की कमाई को ध्यान में रखकर निर्धारित नहीं किया है। मैंने यह लक्ष्य इसलिए निर्धारित किया है क्योंकि में आज देखता हूँ कि अधिकांश गरीब लोगों को चिकित्सा की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हो पाती जिसके कारण उन्हें अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा कभी-कभी तो उनके परिवार के सदस्य की बिना उपचार के असमय ही मृत्यु हो जाती है या जीवन भर रोगों से घिरे रहते हैं। मैं एक

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

चिकित्सक बनकर इन गरीब दीन-दुखियों की सेवा में भी कुछ समय लगाना चाहता हूँ। इसका अर्थ यह नहीं कि मैं अपने परिवार के लिए कुछ नहीं कमाऊँगा। धनी व्यक्तियों से पूरी फीस लँगा, पर अपनी कमाई का कुछ भाग गरीबों के लिए खर्च करूंगा। मैं कमाई के साथ-साथ समाज सेवा करके मनुष्य के कर्तव्य को पूरा करने का प्रयास करूंगा। इससे मैं समाज सेवकों एवं उनकी संस्थाओं से संपर्क करूंगा।

मैंने पढ़ा था-
यही पशु प्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।
मैंने इसी कथन को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है तथा इसे पढ़ाई में चुने जाने के लिए अभी से प्रयासरत रहूँगा।

28. पर्यावरण प्रदूषण

जवाब : पर्यावरण दो शब्दों के मेल से बनता है। परि + आवरण, यानी वह आवरण जो हमें चारों तरफ से घेरे हुए है। नदी, पहाड़, वायु, आकाश, धरती आदि पदार्थ जो हमारे चारों ओर उपस्थित हैं, उसी का नाम पर्यावरण है। 'प्रदूषण' शब्द का अर्थ है-हमारे आसपास का वातावरण गंदा होना। आज प्रदूषण की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। प्रदूषण चार प्रकार के होते हैं-ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और भूमि प्रदूषण।।

भूमि पर जनसंख्या के बढ़ते दबाव तथा उद्योग धंधों के लिए भूमि की कमी को पूरा करने के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है। इसी प्रकार कल-कारखानों की चिमनियों से निकलते धुएँ ने वायु को प्रदूषित कर दिया है। औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला अवशिष्ट पदार्थ जब नदी आदि के पानी में बहा दिया जाता है, तो इस कारण से नदी का पानी प्रदूषित होता है और नगरों में मशीनों, वाहनों आदि के शोर से ध्वनि प्रदूषण होता है।

प्रदूषण के कारण अनेक प्रकार के रोगों का जन्म होता है। वायु प्रदूषण के कारण साँस और आँखों के रोग, खाँसी, दमा आदि होते हैं। प्रदूषित जल के सेवन करने से पेट के रोग हो सकते हैं। ध्वनि प्रदूषण से मानसिक तनाव बढ़ता है। यही नहीं प्रदूषण से उच्च रक्त चाप, हृदय रोग, एलर्जी, चर्म रोग भी हो जाते हैं।

प्रदूषण की रोकथाम के लिए यह आवश्यक है कि वनों की कटाई बंद हो, कारखाने शहरों से दूर स्थापित किए जाएँ। ज़्यादा से ज़्यादा पेड़ लगाने होंगे तथा अपने आसपास साफ़-सफ़ाई का ध्यान रखना होगा।

29. समय का सदुपयोग

जवाब : समय अमूल्य धन है। व्यक्ति के निर्माण में समय का महत्त्व असंदिग्ध है। बीता हुआ समय कभी नहीं लौटता। अतः जो व्यक्ति समय की उपेक्षा करता है समय उसका साथ छोड़कर आगे बढ़ जाता है। इसलिए यह जरूरी है कि समय के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग किया जाय।

सुख और दुख भी समय की देन हैं। समय केवल उसका मित्र है जिसका जीवन का एक-एक पल बहुमूल्य है। उन्नति करने वाला व्यक्ति बेकार की बातों में अपना सयम नष्ट नहीं करता। समय का दुरुपयोग मनुष्य के लिए घातक, उन्नति में बाधक तथा पश्चाताप का कारण बनता है।

प्रत्येक कार्य को करने की एक निश्चित एवं सुदृढ़ योजना बना लेनी चाहिए, फिर उसके अनुरूप कार्य संपन्न करना चाहिए। सूर्य और चंद्रमा निर्धारित समय पर उदय-अस्त होते हैं, पूरी प्रकृति समय के अनुशासन में बँधी हुई है। संसार में जितने भी महापुरु ष हुए हैं, उन्होंने अपने जीवन के एक-एक पल का उपयोग किया है। बड़े-बड़े वैज्ञानिक, संगीतकार, साहित्यकार समय का सम्मान करके ही बड़े बने हैं। समय का सम्मान करना ही सच्ची पूजा है। जो व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करता है, वही जीवन में सदैव प्रसन्न, संतुष्ट और संपन्न रहता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अतः समय का यह महत्त्व समझकर जो व्यक्ति अपने जीवन में आचरण करते हैं, वही समाज की अगुवाई करते हैं। पूज्य एवं पथ प्रदर्शक बनते हैं।

30. प्रकाश पर्व दीपावली

जवाब : त्योहारों के देश भारत में समय-समय पर अनेक त्योहार मनाए जाते हैं, जो व्यक्ति को अपनी संस्कृति से जोड़े रखते हैं तथा जीवन में उल्लास एवं उत्साह भर देते हैं। दीपावली भी भारतीयों द्वारा मनाया जाने वाला एक महत्त्वपूर्ण त्योहार है। दीपावली दो शब्दों से मिलकर बना है-दीप + अवली अर्थात दीपों की पंक्ति। इस दिन दीप जलाने का विशेष महत्त्व है इसलिए इस दिन रात को दीपक जलाकर प्रकाश किया जाता है। अतः दीपावली प्रकाश पर्व है।

दीपावली का त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। दीपावली मनाने के विषय में अनेक मत हैं। कुछ लोगों का विचार है कि जब श्री रामचंद्र जी लंका पर विजय प्राप्त कर अयोध्या लौटे तब उनके स्वागत की खुशी में लोगों ने घी के दीए जलाए थे, तभी से यह त्योहार मनाया जाता है। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद और जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी को दीपावली के दिन ही मोक्ष प्राप्त हुआ था। सिक्खों के छठे गुरु हरगोविंद सिंह इसी दिन मुगलों के कारागार से मुक्त हुए थे। दीपावली सफ़ाई और स्वच्छता का संदेश लेकर आती है। कुछ दिन पहले से ही लोग अपने घरों की सफ़ाई करने में जुट जाते हैं। उस दिन बाजार में दुकानें मिठाइयों, पटाखों और सजावट के सामान से विशेष रूप से सजी रहती है।

दीपावली के साथ पाँच त्योहार जुड़े हैं–धनतेरस, नरक चतुर्दशी, गोवर्धन पूजा और भैयादूज।

धनतेरस के दिन सोने-चाँदी के आभूषण खरीदना शुभ माना जाता है। छोटी दीपावली के दिन नरक चतुर्दशी मनाई जाती है। दीपावली । के दिन रात में लोग अपने-अपने घरों पर दीपकों तथा मोमबत्तियों का प्रकाश किया करते हैं। लक्ष्मीपूजन किया जाता है। बच्चे आतिशबाजी करते हैं। लोग अपने मित्रों एवं संबंधियों के घर मिठाई के साथ शुभकामनाओं तथा उपहारों का आदान-प्रदान करते हैं। दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजा की जाती है और उसके अगले दिन भैया-दूजे का त्योहार मनाया जाता है। हमें इस दिन जुआ। खेलने तथा शराब से दूर रहना चाहिए। दीपावली हमें आनंद एवं प्रकाश देती है, इसलिए हमें यह त्योहार सदैव मिल-जुलकर एवं सद्भावना से मनाना चाहिए।

31. खेलों का महत्त्व

जवाब : खेल हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। चाहे वह बच्चा हो या जवान या बुजुर्ग सभी को खेलना अच्छा लगता है। खेलों से स्वस्थ शरीर एवं मन स्वथ्य रहता है। खेलने से हमारे शरीर में स्फूर्ति और ताजगी आती है। यह एक प्रकार का व्यायाम भी है, जो हमारे शरीर को मजबूत और सुगठित बनाता है।

खेल दो प्रकार के होते हैं-बाहरी और भीतरी। अर्थात घर के बाहर खुले मैदान में खेले जाने वाले खेल तथा घर के अंदर खेले जाने वाले खेल। घर के अंदर खेले जाने वाले खेलों में शतरंज, कैरमबोर्ड, लूडो, साँप-सीढी आदि कई प्रकार के खेल आते हैं। कैरमबोर्ड, शतरंज, लूडो जैसे खेलों से हमारा मानसिक विकास होता है।

घर के बाहर खुले मैदान में खेले जाने वाले खेलों से हमारा मानसिक विकास होता है; जैसे फुटबॉल, क्रिकेट, टेनिस, कबड्डी, हॉकी, बास्केटबॉल, गोल्फ आदि। ये खेल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेले जा रहे हैं।

खेलने वाला व्यक्ति कुछ देर के लिए संसार के सारे झंझटों को भूल जाता है, वह निश्चित हो जाता है। इससे काम करने की शक्ति बढ़ती है तथा हमें समूह में काम करने की आदत पड़ती है। खेलों से हमारे अंदर आत्मविश्वास, सहयोग, अनुशासन, साहस, एकता आदि मानवीय गुणों का भी विकास होता है। हमें नए-नए लोगों से मिलने और

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

समझने का अवसर मिलता है।

आज खेल-जगत में प्रसिद्धि के साथ-साथ धन भी खूब कमाया जा रहा है। इसलिए शारीरिक और मानसिक विकास के लिए हमारे जीवन में खेलों का बहुत अधिक महत्त्व है।

32. ऋतुओं का राजा वसंत

जवाब :
भारत में छह ऋतुओं में वसंत को ऋतुराज कहकर संबोधित किया जाता है, क्योंकि यही ऋतु सबसे अधिक सौंदर्यमयी तथा मादक होती है। इस ऋतु में पृथ्वी का कण-कण रोमांचित हो जाता है। वसंत ऋतु भी दो महीने के लिए आती है। चैत और बैशाख वसंत ऋतु के मास है। इस समय प्रकृति मानो रंग-बिरंगे फूलों की चादर ओढ़े हुए इठलाती दिखाई देती है, इस समय न तो अधिक गरमी होती है और न सरदी। पक्षियों की चहचहाहट, भंवरों की गुन-गुन आदि मधुर संगीत के समान सुनाई पढ़ते हैं। शीतल-मंद-सुगंधित पवन बहने लगती है, सरसों के फूलों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो धरती ने पीली चुनरिया ओढ़ ली हो। आम वृक्षों पर बौर छा जाता है तथा कोयल का मधुर संगीत सुनाई पड़ता है।

वसंत ऋतु उल्लास, उमंग, माधुर्य, मादकता, उत्साह तथा सौंदर्य की ऋतु है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह ऋतु अत्यंत उपयोगी है। भारतीय परंपरा के अनुरूप इसी काल में नए संवत वर्ष का चक्र भी प्रारंभ होता है। यह ऋतु कवियों को बहुत प्रिय है।।

*** निम्नलिखित विषय पर लगभग 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए :** **[24]**

33. प्रार्थना

जवाब : प्रार्थना का सामान्य अर्थ है-किसी के प्रति श्रद्धावान रहते हुए, सच्चे शुद्ध तथा सरल मन से उद्गार प्रकट करना। यह केवल ईश्वर का ध्यान करने के लिए ही नहीं होती, बल्कि यह हमें अनुशासन भी सिखाती है। इसके अतिरिक्त प्रार्थना' व्यक्ति की विनयशीलता, अहंकार शून्यता तथा विनम्रता का प्रतीक है। प्रार्थना का प्रभाव प्रार्थना करने वाले तथा सुनने वाले-दोनों पर पड़ता है। प्रार्थना करने से इसे करने वाले का मन पवित्र होता है तथा इससे सुनने वाले के हृदय में सहानुभूति दया और स्नेह के भाव जाग्रत होते हैं। जब हम परमात्मा से कुछ प्रार्थना करते हैं, तो ईश्वर के प्रति आस्था के भाव जाग्रत होते हैं, कभी-कभी किसी अनुचित कार्य को करने के बाद भी उसे क्षमा कर देने तथा प्रायश्चित स्वरूप प्रार्थना की जाती है। इससे व्यक्ति का अहंकार, दंश तथा नास्तिकता की भावनाओं का अंत होता है।

34. बस्ते का बोझ

जवाब : आज के समय में शिक्षा का पूरे देश में प्रचार-प्रसार हुआ है। शहरों में ही नहीं बल्कि गाँवों में भी बच्चे विद्यालय जा रहे हैं, किंतु यह दुर्भाग्य की बात है कि कोमल के बचपन की पीठ पर भारी-भरकम बस्ते लदे हुए हैं। इस भारी-भरकम बस्तों का बोझ होते हुए बचपन को देखना वास्तव में दुखद है। पुराने जमाने में प्राइमरी कक्षाओं की पढ़ाई तो तीन-चार किताबों से ही हो जाती थी, लेकिन आज प्राइमरी कक्षाओं में एक दर्जन से भी अधिक किताबें होती हैं, जिन्हें पीठ पर ढोकर लाना बच्चों के साथ ज्यादती है। भारी होते बस्ते की परेशानी से आज बचपन दुखी है। जरूरत है कि समय रहते हम इस समस्या को समझें और समाधान खोजें क्योंकि बस्ते का यह भारी बोझ कहीं देश के नौनिहालों के मन में शिक्षा के प्रति अरुचि न पैदा कर दे।

35. परोपकार

जवाब : 'परोपकार' दो शब्दांशों पर + उपकार से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है-दूसरे की भलाई करना। परोपकारी मनुष्य ही सच्चे अर्थों में मनुष्य है क्योंकि वह केवल अपने लिए नहीं जीता, वह पूरे समाज का भला चाहता है। संपूर्ण संसार के कल्याण में वह अपना जीवन अर्पित कर देता है। यही कारण है कि परहित अथवा

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

परोपकार को सबसे बड़ा धर्म माना गया है। वास्तविक मनुष्य वह है जो अपने सुख से अधिक दूसरे के सुख को महत्त्व दे। मानव संस्कृति की प्राचीनता व निरंतरता का कारण परोपकार है। परोपकार प्रकृति भी करती है। नदी मानव कल्याण के लिए बहती है। वृक्ष दूसरों के लिए फल उत्पन्न करते हैं, मेघ प्राणी जगत के लिए बरसते हैं। ऋषि दधीचि, राजा शिवि, महादानी कर्ण, महात्मा बुद्ध, गांधी, लेनिन आदि ने मानव कल्याण के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया। अतः परोपकार में संकोच नहीं करना चाहिए। हमें व्यक्तिगत हानि-लाभ से ऊपर उठकर जन-कल्याण की भावना से कर्म करना चाहिए।

36. पढ़ेगा इंडिया, बढ़ेगा इंडिया

जवाब : किसी देश की उन्नति का सबसे सही माध्यम शिक्षा ही है। देश का हर नागरिक जितना अधिक शिक्षित होगा, देश उतनी ही तेज़ी से तरक्की करेगा। सरकार ने इस बात को जान लिया है, इसी कारण देश में सभी को शिक्षित व साक्षर बनाने के लिए अनकानेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं। बच्चों के हाथों में पुस्तकें देखकर कितनी खुशी मिलती है, किंतु देश का दुर्भाग्य है कि आज भी हर
बच्चों के पास पुस्तक नहीं है, पुस्तकों की जगह उनके हाथों में फावड़ा, बर्तन, कूड़े की पन्नियाँ आदि हैं। 'बालश्रम एक अपराध है' यह वाक्य बस कहने भर को है, सच्चाई इसके ठीक विपरीत है। आज भी धनी घरों में नन्हें हाथ मजबूरी में फ र्श पर पोंछा लगाते हुए दिखाई दे जाते हैं या जूतों की पॉलिश को चमकाते हुए। अतः हम सब यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि बिना पढ़ लिखकर देश की सही उन्नति नहीं हो सकती।।

37. परिश्रम का महत्त्व

जवाब : मानव जीवन में परिश्रम का अत्यधिक महत्त्व है। यह सभी प्रकार की उपलब्धि अथवा सफ लता का आधार है। परिश्रमी मनुष्यों ने मानव-जाति के उत्थान में अतीव योगदान दिया है। हमारी वैज्ञानिक उन्नति के पीछे अथक परिश्रम का बहुत बड़ा योगदान रहा है। अपने परिश्रम के सहारे मानव सुदूर अंतरिक्ष में जा पहुँचा है। अतः परिश्रम से बचने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। जिसे राष्ट्र के नागरिक परिश्रम को महत्त्व नहीं देते, वह राष्ट्र संसार के अन्य देशों से पिछड़ जाता है। यही कारण है कि हमारे महापुरुषों ने लोगों को परिश्रम करते रहने की सलाह दी है। कोई भी कार्य परिश्रम करने से ही पूरा होता है। केवल इच्छा करने से नहीं बल्कि किसी ध्येय की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना अत्यावश्यक है।

38. मीठी वाणी का महत्त्व

जवाब : 'वाणी' ही मनुष्य को लोकप्रिय बनाती है। यदि मनुष्य मीठी वाणी बोले, तो वह सबका प्यारा बन जाता है और जिसमें अनेक गुण होते हुए भी यदि उसकी 'बाणी' मीठी नहीं है तो उसे कोई पसंद नहीं करता। इस उदाहरण को कोयल और कौआ के तथ्य से अच्छी तरह से समझा जा सकता है। दोनों देखने में एक समान होते हैं, परंतु कौए की कर्कश आवाज़ और कोयल की मधुर वाणी दोनों की अलग-अलग पहचान बनती है, इसलिए कौआ सबको अप्रिय और कोयल सबको प्रिय लगती है। मीठी वाणी बोलने वाले कभी क्रोध नहीं करते बल्कि प्रेम सौहार्द से समाज में मेल-जोल बढ़ाते हैं।

39. क्रिसमस

जवाब : 'क्रिसमस' ईसाइयों का प्रमुख त्योहार है। यह ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा मसीह के जन्म-दिन के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 25 दिसंबर को दुनियाभर में अत्यंत धूमधाम, उल्लास एवं उत्साह से मनाया जाता है। क्रिसमस की तैयारियाँ काफ़ी दिन पूर्व शुरू हो जाती हैं। इस अवसर पर ईसाई लोग नए-नए वस्त्र पहनते हैं, अपने घरों को सजाते हैं तथा अपने मित्रों एवं संबंधियों को शुभकामनाएँ तथा उपहार भेजते हैं। गिरजाघरों में विशेष प्रार्थनाएँ आयोजित की जाती हैं। 'वेटिकन सिटी' में ईसाइयों के सबसे बड़े धर्म गुरु 'पोप' लोगों को दर्शन तथा अपना संदेश देते हैं। इस अवसर पर घरों में क्रिसमस ट्री' बनाया जाता है। बच्चे 'सांता क्लॉज' की प्रतीक्षा करते हैं। यह त्योहार प्रेम, शांति, क्षमा तथा भाईचारे का संदेश देता है।

40. प्रात:कालीन सैर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जवाब : प्रात:काल की सैर का आनंद अनूठा होता है। इस समय वातावरण शांत एवं स्वच्छ होने से तन-मन को अद्भुत शांति एवं राहत मिलती है। प्रात:कालीन की सैर से व्यक्ति निरोगी रहता है। दिन भर कार्य करने की ताकत एवं स्फूर्ति मिल जाती है। कार्य करने में मन लगता है और थकावट नहीं होती है। प्रात:कालीन सैर से अनेक रोगों का निवारण होता है। शरीर को शुद्ध, प्रदूषण रहित हवा प्राप्त होती है। पाचन शक्ति बढ़ती है। मोटापा, मधुमेह इत्यादि बीमारियों से मुक्ति मिल सकती है। अतः प्रात:काल की सैर अनेक रूपों में लाभदायक सिद्ध होती है। हमें प्रात:काल की सैर को आनंद अवश्य उठाना चाहिए।

----- -----

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in